CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue
Issue I Vol. II , 10th March. 2018
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Godavari Manar Charitable Trust's

Arts, Commerce & Science College, Shankarnagar

Tq. Biloli, Dist. Nanded

(NAAC Re-accredited 'B' Grade with CGPA 2.31 & ISO- 9001-2008)

One Day Interdisciplinary National Conference

on

Globalization and Welfare States: Problems and Prospects

Special Issue | Issue I Vol II | Date- 10-03-2018

Jointly Organized by
Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded
&
Public Administration Association Maharashtra

Organized by
Department of Public Administration
Arts, Commerce & Science College, Shankarnagar

Editor In Chief
Mr. Arun B. Godam
Latur.

Convener
Dr. B. S. Pimple
Principal, ACS College, Shankarnagar &
President, Public Administration Association Maharashtra

Co-Convener
Dr. S. K. Lekhane
(HOD Pub. Adm.)

Coordinator
Dr. A. C. Sonkamble
(Asso. Prof. Pub. Adm.)

Copyright © Shaurya Publication, Latur | www.rjorunals.co.in | Email-hitechresearch11@gmail.com

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue
Issue I Vol. II , 10th March. 2018
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

Index

Sr. No.	Paper Title	Author	Page No.
1	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा की स्थिति और गति	डॉ.निवृत्ती भागवत	1
2	"वैश्वीकरण तथा आरक्षण"	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	3
3	सामाजिक न्याय और भारत की स्थिती	प्रा.डॉ.डी.के.खोकले	6
4	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा का महत्त्व	प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे	10
5	जागतिकीकरणाचा भारतीय लोकप्रशासनावर (शासनावर) होणारा परिणाम	प्रा.किशोरकुमार मनोहरराव इंगळे	14
6	जागतिकीकरणाचा महिला सबलीकरणांवर प्रभाव	प्रा. आशा दगडू आकोलकर	17
7	जागतिकीकरण आणि सामाजिक न्याय	प्रा.डॉ.नवनाथ गोविंदराव अडकिणे	19
8	कल्याणकारी राज्य व समाजकल्याण प्रशासन	डॉ.रेखा कलवले	22
9	७३ वी घटना दुरुस्ती व मागासवर्गीय महिला आरक्षण	प्रा.डॉ.बी.आर.कत्तुरवार	25
10	सामाजिक कायदे : समाजकल्याणाचे एक साधन	प्रा.डॉ.सुधाकर भालेराव	28
11	जागतिकीकरण आणि आरक्षण धोरण : स्वरुप व वास्तव	डॉ. प्रमोद चव्हाण	31
12	जागतिकीकरण आणि सामाजिक न्याय	प्रा. रामचंद्र गायकवाड	35
13	जागतिकीकरण व सामाजिक न्याय	प्रा.चावरे मधुकर विठ्ठलराव	38
14	जागतिकीकरण व सामाजिक न्याय	शिवाजी रामराव कराळे	41
15	जागतिकीकरणाचा डिजीटल ग्रंथालयावर झालेला प्रभाव	प्रा. वाघमारे संजय शामराव	45
16	जागतिकीकरण आणि आण्विक दहशतवाद	प्रा.डॉ.मानवते उत्तम हुसनाजी	48
17	कल्याणकारी राज्य व समाज कल्याण प्रशासन	डॉ.सुरेश गजभारे	50

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Ta. Bilhi Dist. Nanded.

SHAURYA PUBLICATION Latur
Special Issue
Issue I Vol. II , 10th March 2018
CURRENT GLOBAL REVIEWER
UGC Approved
Sr. No. 64310
ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 2.143

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा का महत्त्व

प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे

सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग , कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर ता.बिलोली जि.नांदेड.

---------- (04) ----------

प्रस्तावना :-

भारत देश प्रकृति और भौतिक दृष्टि से एक अद्‌भुत राष्ट्र है। प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही साथ भाषाओं का सामजंस्य निराला है । काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भिन्न-भिन्न भाषाओं का प्रभुत्व है। आज के वैश्वीकरण के दौर में किसी एक भाषा का प्रभुत्व एक ही प्रदेश या राष्ट्र तक सीमित नहीं रहा है। इंटरनेट के युग में भाषायी मेलजोल प्रस्थापित हुआ है। भारत में हर एक राज्य में अनेक भाषाएँ बोली जाती है। भाषा के संदर्भ में कहा जाता है कि, भाषा के बिना राष्ट्र अंधा होता है। विश्व के हर एक राष्ट्र की निश्चित की गयी राजभाषा होती है। भारत की राजभाषा हिंदी को संविधान में १४ सितंबर १९४९ के दिन स्वीकृत किया गया है। इसी के साथ ही साथ प्रादेशिक भाषाओं को विभिन्न राज्यों की प्रशासन की भाषा के रूप में स्वीकृती दी गई है। विदेशों में भारत की हिन्दुस्तानी अर्थात हिंदी बोलनेवाले के रूप में पहचान है। भारत की हिंदी भाषा के बारे में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने स्पष्ट कहा है कि,

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।"

आज के वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा पूर्ण रूप से सक्षम और समर्थ है। आज के युग में विश्व के सभी देशो में हिंदी भाषा बोलनेवाले और समझनेवालों की संख्या अधिक है। आज विस्तृत तकनिकी सूचना संचार प्रणाली की व्यवस्था के कारण आदान-प्रदान सुचारू रूप से चल रहा हैं। आज भारत विश्व का एक महत्त्वपूर्ण देश बन कर उभरा है। व्यापार, साहित्य, संस्कृति, पर्यटन की दृष्टि से सभी क्षेत्रों में वैश्वीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। अतः वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा में भी बहुत सारे बदलाव आये है।

वैश्वीकरण :-

आज विश्व में भारत उत्पाद निर्माताओं के लिए सबसे बड़ा उपभोक्त बाजार है। हमारे देश में भी कई सारे वस्तुओ का उत्पादन होता है। उन्हें भी बाजार की आवश्यकता है। बढ़ते बाजारीकरण के परिणाम हिंदी भाषा पर हुए है। क्रय-विक्रय की दृष्टि से हिंदी में रोजगारभिमुख पाठ्यक्रमों की स्पर्धा बढ़ी है। भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में दुसरे क्रम पर है। विश्व की सबसे बडी युवा शक्ती भी भारत के पास है। इन युवाओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी भाषा का विश्व के देशों में भी परिणाम हुआ है। आज वैश्वीकरण के चलते प्रांतीय भाषाओं की स्थिती बदतर है परंतु हिंदी भाषा ने नये भूप्रदेशों में विस्तार कर लिया है। विश्व के विभिन्न प्रदेशों के लोग एक-दूसरे से जुड़े हुए है। यह एक-दूसरे से जूडना विभिन्न प्रकार से है। उसमें प्रमुख रूप से हिंदी भाषा के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान होता रहा हैं। लोगों की परस्पर निर्भरता यह केवल आर्थिक क्षेत्र तक ही नहीं है अपितु यह परस्पर साहित्यिक, वैचारिक, तकनिकी का आदान-प्रदान करने का माध्यम भी है। वे एक-दूसरे की संस्कृति, कलात्मकता, यात्रा, सामाजिक व्यवस्था के मूल्यों की अंर्तक्रिया भी है। इसी प्रक्रिया को वैश्वीकरण की संज्ञा से संबोधित किया जाता है। वैश्वीकरण के कारण परस्पर दूरियाँ को मिटाकर रिश्तों में मिठास निर्माण होती है। वैश्वीकरण की सरलता से एक-दूसरे की भाषायी दोषों का निदान भी संभव है। आंर्तराष्ट्रीय स्तर पर देश के रिश्ते मजबुत बन जाते है। भारत के प्रधानमंत्री श्री.अटलबिहारी वायपेयी ने युनों में हिंदी में भाषण दिया था। उनके भाषण से विश्व के कई देशों के राजदूतों, अधिकारियों को भारतीय संस्कृति का परिचय हुआ। साथ ही साथ हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर हेय की दृष्टि देखा जाता था, परंतु हिंदी की मिठास भरी वैचारिकता सुनकर विश्व के लोगों में हिंदी भाषा के प्रति रूचि उत्पन्न हुई। आज विश्व के अनेक देशों में भारतीय लोगों का निवास है। यह समस्त भारतीय लोग अपनी विरासत को वहाँ के देशों में प्रसारित कर रहे है। मॉरिशस, फिजी, गुयाना, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लँड, अमेरिका, श्रीलंका, नेपाल, चीन आदि कई देशों में हिंदी बोलनेवाले और समझने वालों की संख्या कही अधिक है। कई विश्वविदयालयों में हिंदी का अध्ययन,

अध्यापन हो रहा है। हिंदी साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति तथा परिवेश का अध्ययन हो रहा है। दुनिया के अनेक देशों में हर साल हिंदी भाषा के मंथन के लिए संगोष्ठियाँ, परिचर्चा, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया जाता हैं। प्रवासी भारतीयों द्वारा विभिन्न विधाओं में साहित्य लेखन भी हो रहा हैं। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में हिंदी भाषा अग्रसर है। दुनियाँ के कई देशों को भारत की शिक्षा एवं अध्यात्म्य आकर्षिक करता रहा हैं। आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसी देश का स्थान मजबुत माना जाता है, उस देश में भाषाई साहित्य कितना समृद्ध है। भाषा समाज का दर्पण है। भाषा के माध्यम से ही वैश्वीक स्तर पर समस्त ज्ञान-विज्ञान का विस्तार हो जाता है।

वैश्वीकरण : हिंदी भाषा का महत्त्व :-

भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की हिंदी भाषा का दूसरा स्थान है। पुरे विश्व में आबादी की दृष्टि से भारत दुसरा क्रमांक है। इसी कारण दुनियाभर के उत्पादकों की दृष्टि से भारत एक बड़ा बाजार है। क्रय-विक्रय की दृष्टि से आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्पादक निर्माताओं में हिंदी के प्रति रूचि है। यही कारण है कि, दुनिया के सभी देशों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव है। भारतीय संस्कृति, मूल्य, रीतिरिवाज, कला आदि विश्व को आकर्षिक करते हैं।

साहित्यकार मस्तिष्क, बुध्दि और हृदय से संपन्न सामाजिक प्राणी है। जब वह समाज में रहते हुए जीवन व्यतित करता है तो उसे अनेक प्रकार के मानसिक घुटन, तनाव, संघर्षो का अनुभव आता है। इसी संघर्षो की अभिव्यक्ति से दबे हुए भाव, विचार प्रकट होते हैं। परिणामस्वरूप साहित्यिक विधाओं का प्रकटीकरण होता है। समाज के साथ व्यक्ति का गहरा और अटूट रिश्ता जुड़ा रहता है। इसी कारण साहित्य लेखन प्रेरणा बन जाता है। समाज के प्रभाव का प्रत्यक्ष परिणाम व्यक्ति के जीवन पर होता है। समाज द्वारा संचालित, मूल्य, प्रथा, परम्पराएँ कभी आदर्श बन जाती है तो कभी व्यक्ति के जीवन को उध्वस्त करती है। साहित्य और समाज का अटूट संबंध होता है। कबीर, प्रेमचंद, तुलसीदास, सूरदास, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, भीष्म सहानी आदि कई साहित्यकारों द्वारा लिखा गया साहित्य समाज की ही उपज है। कबीर ने मध्ययुग की अनिष्ठ प्रथा-परम्पराएँ, बाह्य आडंबर, सामाजिक कुरीतियाँ आदि के विरोध में कलम चलायी है। इनके द्वारा लिखित साहित्य विश्व स्तर तक जब अनुवाद के माध्यम से पहुँच जाता है तो भारतीय समाज के प्रति विश्व स्तर पर सामाजिक संवेदनाएँ जाग उठती है। कार्ल मार्क्स, लेनिन, वर्डसवर्थ आदि के रचनाओं में भी समाज की यथास्थिति का दर्शन हमें हिंदी भाषा के माध्यम से ही संभव है।

राजनीतिक महत्त्व :-

वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा का राजनीतिक महत्त्व भी कम आँका नहीं जा सकता। आज भारत के नागरिक हर देशों में कम-अधिक संख्या में निवास करते है। भले ही विदेशों में रहनेवाले भारतीय उस देश की सांस्कृतिक मूल्यों के साथ जुडे हुए हो परंतु अपनी मातृभाषा, देश की भाषा के प्रति उनका लगाव हैं। दुनिया के कई देशों में भारतीय दूतावास स्थापित हैं। भारत के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, प्रशासनिक अधिकारी जब विदेशों में जाते है तब वहाँ पर हिंदी और अंग्रेजी भाषा में भी संवाद स्थापित करते है। विदेशों में रहनेवाले भारतीयों को हिंदी में संबोधित किया जाता है। इतना ही नहीं जब-जब विदेशी भारत में पर्यटन के हेतू आते है तभी वे भी यहाँ के स्थानिक लोगों से हिंदी में बातचीत करते हैं। भारत में भी अनेक प्रादेशिक भाषाओं के साथ ही साथ मुख्य रूप से हिंदी भाषा बोली और समझी जाती है। राजनीतिक नेता लोग अपने विचारों को असंख्य जनों तक पहुँचने के लिए हिंदी भाषा को चुनते हैं। आज संप्रेषण का महत्त्वपूर्ण साधन भाषा के साथ ही साथ टि.वी. इंटरनेट, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के साधन उपलब्ध है। अधिक से अधिक युवाओं तक पहुँचने के लिए राज्य, राष्ट्र, और विश्व स्तर तक पहुँचने के लिए हिंदी भाषा का महत्त्व दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

आर्थिक महत्त्व :-

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में एक देश दूसरे देश के निकट आ चुका है। एक-दूसरे की निर्भरता पर ही देशों का विकास संभव है। हर एक देश के पास भिन्न-भिन्न संसाधन उपलब्ध है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में देशों के बीच व्यापार, निवेश, यात्रा, लोकसंस्कृतिक और अन्य प्रकार की अंर्तक्रिया का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। उदाहरण के लिए सूती वस्त्रों के उदयोग में जापान, भारत अन्य देशों के कपास उत्पादन पर

निर्भर रहता है। हम सब इससे परिचित तो है ही कि, अमेरिका का सूचना प्रौदयोगिक उद्योग भारत और अन्य देशों के इंजिनियरों पर निर्भर है। आज के वैश्वीकरण में प्रतिभा-संपंन्न लोग पूर्व से पश्चिम के देशों में विस्थापित हो रहे है।

एक तरफ हम देखते है कि, भारत में साहित्य की भाषा पर संस्कृत का प्रभाव है तो दूसरी और संचार माध्यमों में जनभाषा ने विस्तृत रूप प्राप्त किया है। बाजार में हिंदी का सकारात्मक परिणाम सिध्द हुआ है। पिछले कुछ वर्षो से हिंदी में बनाये जा रहे विज्ञापनों की होड़ मची हुई है। भारत के बाजार में जो उपभोक्त वर्ग है, वह मध्य और निम्न स्तरीय है। इसी को ध्यान में रखते हुए वैश्वीक स्तर की व्यावसायिक कम्पनियों ने अंग्रेजी की अपेक्षा हिंदी में प्रचार-प्रसार का कार्य किया है। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी बदलाव हुए है। हिंदी पत्रकारिता के कारण अहिन्दीतर राज्यों में भी हिंदी के प्रति आत्मियता बढ़ोतरी हो रही है।

सांस्कृतिक महत्त्व :-

विश्व में सबसे श्रेष्ठ सांस्कृतिक विरासत भारत के पास मौजूद है। कला, नृत्य में भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ है। शिल्पकला, चित्रकला, वास्तुकला के बेजोड़ नमुने भारत में हैं। वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति का उदात्त रूप प्रसारित हो रहा है। वेलोरा, अजन्ता, खजुराहो, कोणार्क ऐसे असंख्य शिल्पकलाओं के प्राकृतिक नमुने भारत में स्थापित है। ज्ञान के नए स्त्रोंतों का भंडार सांस्कृतिक मूल्यों में छिपा हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव के चलते इन उपेक्षित कलाओं का विकास और भी संभव है। भारत के हर राज्य में सांस्कृतिक विविधता भी है। पंजाब में भाँगडा, गुजरात का गरबा, महाराष्ट्र का पोवाडा, लावणी, भारूड, असम का बिहु लोकनृत्य, बंगाल का दुर्गा महोत्सव, कर्नाटक का यक्षगान, दक्षिण में कथक आदि नृत्याविष्कार के प्रकार हैं। लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगीत, लोककथा, आदि सांस्कृतिक विविधताएँ हैं। भारत की सांस्कृतिक कला विदेशों में पहुँचने के कारण विश्व मंच उपलब्ध हुआ है। मनोरंजन के क्षेत्र में चित्रपट, धारावाहिक, व्यंग्य ने विश्व स्तर पर अपनी अमीट छाप छोड़ी है।

वैश्वीकरण के लाभ :-

समाज का दर्पण साहित्य ही है। इस दृष्टि से साहित्य भी संचार का माध्यम है। साहित्य लेखक के विचारों, अनुभवों की भावाभिव्यक्ति है। एक व्यक्ति के भाव साहित्य के माध्यम से दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाते है। शब्द, वाक्य की सहायता से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की संवेदनाओं से जुड जाता है। आज विश्व में हिंदी भाषा बोलनेवाले एवं समझनेवालों की संख्या में वृद्धी हुई है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी भाषिक लोग बसे हुए है। यह समस्त लोग हिंदी भाषा, साहित्य के कारण स्वयं की भाव-भावनाओं का प्रकटीकरण करते हैं। वैश्वीकरण यह एक पारस्परिक क्रिया है। भारत का एशिया, युरोप के देशों में उदयोंगों का विस्तार हुआ है। भारत को एक समय में सोने की चिड़िया कहा जाता था। इससे आकर्षित होकर दुनिया के अनेक देशों से व्यापारी और पर्यटक आए। जिसका परिणाम भारत की संस्कृति, कला और अन्य क्षेत्रों पर भी हुआ है। वैश्वीकरण के कारण युरोप की संस्कृति, मूल्य, रीतिरिवाजों का भारत में भी प्रचलन बढ़ा है। वैश्वीकरण के कारण यहाँ की शिक्षा, राजनीति, अर्थ, तकनिकी, चिकित्सा, पर्यटन आदि क्षेत्रों को लाभ हुआ है। वैश्वीकरण के प्रभाव के परिणामस्वरूप भारतीय वैज्ञानिकों एवं पर्यटकों ने विश्व का भ्रमण किया। जिसका लाभ उन्हें ज्ञान बढ़ोतरी में हुआ। वैश्वीकरण के कारण हिंदी साहित्य का क्षेत्र विस्तारित हुआ। फिजी, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनिनाद और भी ऐसे कई देशों में हिंदी भाषा में साहित्य लिखा गया। परिणामस्वरूप हिंदी साहित्य को विश्व स्तर पर मंच मिला। आज विश्व के कई देशों में हिंदी भाषा संचार का प्रमुख माध्यम बनी हुई है। हिंदी को विश्व स्तर के प्रसार में अहंम भूमिका निभाने में संचार माध्यमों का भी योगदान रहा है।

वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव :-

वैश्वीकरण की प्रक्रिया में जैसे-जैसे देश निकट आते गए वैसे-वैसे कुछ चुनौतियाँ भी खड़ी रही है। वैश्वीकरण के दुष्प्रभाव सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक क्षेत्र पर भी बड़े पैमाने पर हुए है। वैश्वीकरण के स्तर पर सूचना का विस्फोट हुआ है। जनसंचार माध्यमों की बदलती भूमिकाओं ने संदेह के घेरे में खड़ा किया है।

वैश्वीकरण के दुष्परिणाम साहित्यिक क्षेत्र पर अधिक हुए है। मौलिक साहित्य की परम्परा समाप्त हुई है। अनुदित साहित्य का प्रचलन बड़ी संख्या में बढ़ गया है। विदेशी लेखकों द्वारा लिखा जा रहा साहित्य उस देश की संस्कृति का बयान करता है। पाश्चात्य साहित्य में कल्पना एवं कोरा आदर्श ही आधार होता है। इसी के कारण साहित्य कृतियाँ एकही पक्ष का उद्घाटन करती है। वैश्वीकरण के प्रभाव से साहित्य जन शिक्षण से कोसों दूर रहता है। बढ़ते संचार माध्यमों के कारण हिन्दी भाषा की मूल कृतियों को पाठक पढ़ नहीं पाता। इलेक्ट्रॉनिक्स संचार माध्यमों पर संप्रेषण की शक्ती का विकास नहीं हो पाता। बाजारीकरण, उदारीकरण के कारण हिंदी भाषा के अभिव्यक्ति कौशल का विकास नहीं हो पाता। आज ई-लाईब्रेरी विस्तृत हो रही है। लाभ के साथ ही उसके दुष्परिणाम भी बहुत है। वैश्वीकरण के दौर में विभिन्न देशों में लिखे जा रहे साहित्य में अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के मूल तत्व भी निहित होते है। वैश्वीकरण के प्रभाव से अंग्रेजी मिश्रीत हिंदी भाषा का रूप उभरकर आ रहा है। हिंदी के मूल शब्द खोते जा रहे हैं। वैश्वीकरण के व्यापक प्रभाव से पुरानी पत्रिकाएँ बंद हो गयी हैं। जिसमें हिंदी भाषा तथा साहित्य पर मंथन हुआ करता था। भारत में भी अनेक प्रतिभाएँ है। वैश्वीकरण के प्रभाव से वे पलायन किये बिना नहीं रहे। प्राचीन काल में भारत शिक्षा एवं अध्यात्म की दृष्टि से केंद्र था। परंतु वस्तु और उद्योगों ने ही नहीं बल्कि प्रतिभा संपन्न वैज्ञानिकों ने भी दूसरे देशों में आश्रय लिया है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से आज हिंदी भाषा में भी संचार माध्यमों का प्रचलन बढ़ गया है। जिसके परिणाम स्वरूप संख्यात्मक दृष्टि से साहित्यकार बढ़ते चले गए परंतु साहित्य में गुणात्मकता का अभाव दिखाई देता है।

उपसंहार :-

साहित्य समाज की प्रगति का सूचक होता है। साहित्य के माध्यम से समाज का समग्र परिचय प्राप्त होता है। प्राचीन काल से ही भारत साहित्य और भाषा की दृष्टि समृद्ध राष्ट्र है। वैश्वीकरण के दौर में भी हिंदी भाषा तथा साहित्य का महत्त्व है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र को जानना है तो उपन्यास, नाटक, काव्य, यात्रा वर्णन आदि साहित्यिक विधाओं के अध्ययन से जानकारी प्राप्त होती है।

आज विश्व के कई देशों में भारतीय उद्योग, पर्यटन, शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। तकनिकी युग में विश्व छोटासा लगता है। विदेशों में रहनेवाले भारतीय लोग अपनी सुख-दुःख की अनुभूतियों को हिंदी भाषा के साहित्य विधाओं में अभिव्यक्त कर रहे हैं। साहित्य का महत्त्व इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यमों के बावजूद भी बढ़ता जा रहा है।

वैश्वीकरण के बढ़ते कदमों के परिणाम सकारात्मक भी और नकारात्मक भी हुए है। हिंदी भाषा पर वैश्वीकरण का प्रथम प्रभाव यह है कि, विश्व और भारतीय लोगों के बीच में साहित्य, पर्यटन, उद्योग, शिक्षा, तकनिकी मनोरंजन आदि के क्षेत्र में आदान-प्रदान हुआ है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में एक देश दूसरे देश पर निर्भर रहने के कारण आपसी दूरियाँ मिट गई है। दोनों के बीच में परस्पर सौहार्द की भावना का विकास हुआ है। वैश्वीकरण का महत्व कई क्षेत्रों में अनिवार्य बन गया है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में विचारों के आदान-प्रदान से विकास प्रगति की दिशा में अग्रसर है। इसके साथ ही साथ वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर दुष्परिणाम भी हुआ है। बढते वैश्वीकरण के कारण प्रतिभा संपन्न कलाकारों को पैसों का मोह बढ़ता जा रहा है। विश्व साहित्य के जेसा साहित्य रचा जा रहा है, परंतु हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द आ रहे है। परिणामस्वरूप हिंदी भाषा के शब्दों का विकृत रूप भी बनता नजर आ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :-

१) सर्वोत्तम हिंदी निबंध - साहन सिंह.
२) समकालीन भारतीय साहित्य में आनुनिक युगबोध - डॉ.सुशील धर्माणी, डॉ.रेणु.
३) भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास - डॉ.पुष्पपाल सिंह.
४) भूमंडलीकरण और हिंदी - सम्पादक - कल्पना वर्मा.
५) भूमंडलीकरण और हिंदी सिनेमा - सम्पादक - हिमांशु.
६) भारत में वैश्वीकरण प्रभाव : पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था - असीम श्रीवास्तव.